भी दिया जाता है। यदि सब ठीक हो जाता है, तो फिर उनको छोड़ दिया जाता है। इसमें कानूनी कार्यवाही करने की तथा जुर्माना करने की भी गुंजाइश है, लेकिन वह स्टेट का अधिकार होने के कारण, हमने देखा है कि लॉ एंड आर्डर का मसला भी खड़ा हो जाता है। हम बराबर स्टेट गवर्नमेंट के सम्पर्क में रहते हैं। मेरा मंत्रालय चैनल्स और ब्रॉडकास्ट के ऊपर कार्यवाही करता है और advisories इश्यु करता है। हमने सिर्फ कंटेन्ट रेग्युलेशन के बारे में इस साल अलग-अलग कैटिगरीज़ के कुल पचास नोटिसेज़ जारी किए हैं।

MR. CHAIRMAN: Now, Question No.243; Hon. Members not present.

Question No. 244; Hon. Member not present.

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, please amend the rules.

MR. CHAIRMAN: The rule is being amended and this situation shall be done away with very soon.

*243. *[The questioner(s) Shri A. Elvarasan and Shri N.R. Govindrajar were absent. For answer *vide* page 37 *infra*.]

*244. *[The questioner Dr. Prabha Thakur was absent. For answer *vide* page 37 *infra*.]

Losses to NFDC

*245.SHRI MOHD. ALI KHAN: Will the Minister of INFORMATION AND BROADCASTING be pleased to state:

(a) whether there have been losses to the National Film Development Corporation (NFDC);

(b) if so, the details thereof and the reasons therefor;

(c) the amount to be collected from the advertisement agents; and

(d) the steps being taken to strengthen NFDC in each State?

THE MINISTER OF INFORMATION AND BROADCASTING (SHRIMATI AMBIKA SONI): (a) to (d) A Statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) and (b) Yes, Sir. The National Film Development Corporation (NFDC) has accumulated losses of Rs. 27.62 crores as on 31.03.2009. These losses are mainly due to decline in gross profit margins, loss of business of marketing of Free Commercial Time (FCT) of Doordarshan, loss of royalty due to discontinuation of business of acquisition of films by DD through NFDC, a part of revenue of TV marketing being under litigation, expenditure on VRS for reduction of manpower and high personnel and administrative expenditure over the years not in consonance with the business activities and income of NFDC.

(c) NFDC has aggregate outstanding dues of Rs.36,75,17,102.44 to be collected from the advertisement agents as on 31.03.2009.

(d) NFDC, with its headquarters in Mumbai, has three regional offices, one each in Delhi, Kolkata and Chennai catering to the needs of the film industry in their respective regions. It also

has one branch office in Thiruvananthapuram in Kerala. Government has provided funds under the Eleventh Plan Scheme to NFDC to produce films in various regional languages. Further, in an effort to strengthen the business of NFDC in various states, a request has been made by the Ministry of Information and Broadcasting to the Chief Ministers of various states for giving the production work of documentaries and video spots of their states to the National Film Development Corporation. Govt. has initiated a major restructuring Proposal for NFDC in order to strengthen the organization.

श्री मोहम्मद अली खान : चेयरमैन साहब, मैं वजीरे मोहत्रमा से यह जानना चाहता हूं कि जो प्राइवेट ऑप्रेटर्स का NFDC का बकाया है, वह करोड़ों, अरबों और खरबों रुपयों में है। आपको, हमको और इस हाउस को जानकारी है कि यह एक आम आदमी का पैसा है। सर, यह ऑपरेटर्स का बकाया रहने के बावजूद भी उनका एडवर्डटाइजमेंट कम्पलीट चल रहा है, मैं वजीरे मोसूफ़ से यह जानना चाहता हूं कि कि उनका बकाया कलेक्ट करने के लिए, क्या कोई खास कमेटी बनाई है या कोई अन्य कार्यवाही की है? सरकार ने यह बकाया वसूल करने के लिए क्या तरीका अख्तियार किया है, मैं यह जानना चाहता हूं?

†جناب **محمد علی خان** : چیئرمین صاحب، میں وزیر محترمہ سے یہ جاننا چاہتا ہوں کہ جو پرائیویٹ آپریٹرس کا این۔ایف۔ڈی۔سی۔ کا بقایا ہے، کروڑوں، اربوں اور کھربوں روپے میں ہے۔ آپ کو، ہم کو اور اس ہاؤس کو اگر اس بارے میں جانکاری ہے کہ یہ ایک عام آدمی کا پیسہ ہے، سر، یہ آپریٹرس کا بقایا رہنے کے باوجود بھی ان کا ایڈورٹائزمینٹ کمپلیٹ چل رہا ہے، میں وزیر موصوفہ سے یہ جاننا چاہتا ہوں کہ ان کا بقایا کلیکٹ کرنے کے لئے، کیا کوئی خاص کمیٹی بنائی ہے یا کوئی اور کاروائی کی ہے؟ سرکار نے یہ بقایا وصول کرنے کے لئے کیا طریقہ اختیار کیا ہے، میں یہ جاننا چاہتا ہوں۔

श्रीमती अम्बिका सोनी : सर, यह बात सच है कि कुछ अर्से से National Film Development Corporation नुकसान में जा रहा था और 31.03.2009 तक उनके losses Rs. 27.62 crores हो गए थे। इस प्रकार के कई कारण थे, जिनके कारण उनके budgetary provisions में यह कमी आई। उसका एक प्रमुख कारण यह भी था कि जो दूरदर्शन में उनको फ्री कमर्शियल टाइम मिलता था, वह खत्म किया गया, तो उससे उनका काफी नुकसान हुआ। अब 36,75,17,102.44 रुपया वसूल करना है, इसके लिए NFDC ने 16 कम्पनियों के खिलाफ मुकदमे शुरु किए हैं। हम लोग कोर्ट्स और कचहरियों में उनको follow कर रहे हैं, लेकिन यह जो इन्होंने सिर्फ फ्री कमर्शियल टाइम के जरिए 591 करोड़ का टर्न ओवर किया था, कंपनी का जो accounting system होता है, उसके मुताबिक 36 करोड़ जो करीब 6 कुछ फीसदी बनता है, जो अब तक बहुत बड़ी रकम नहीं मानी जाती है। उसके बावजूद, क्योंकि यह आम आदमी का पैसा माना जाता है, इसलिए पैसा वसूल करने के लिए कानूनी कार्यवाही की जा रही है।

†[ ]Transliteration in Urdu Script.

श्री मोहम्मद अली खान : सभापति जी, मेरा दूसरा सवाल है कि National Film Development Corporation ने मुख़्तलिफ़ रियासतों में regional film बनाने के लिए उनको finance किया है, मैं वजीरे मौसूफा से यह जानना चाहता हूं कि क्या आंध्र प्रदेश में या इस देश में उर्दू, तेलुगू या हिंदी फिल्म बनाने के लिए कुछ पैसा दिया गया है? अगर दिया गया है तो कितना दिया गया है? मैं यह जानकारी चाहता हूं।

†**جناب محمد علی خان** : سبھا پتی جی، میرا دوسرا سوال ہے کہ National Film Development Corporation نے مختلف ریاستوں میں ریجنل فلم بنانے کے لئے ان کو فائننس کیا ہے، میں وزیر موصوفہ سے یہ جاننا چاہتا ہوں کہ کیا آندھرا پردیش میں یا اس دیش میں اردو، تیلگو یا ہندی فلم بنانے کے لئے کچھ پیسہ دیا گیا ہے؟ اگر دیا گیا ہے تو کتنا دیا گیا ہے؟ میں یہ جانکاری چاہتا ہوں

श्रीमती अम्बिका सोनी : सभापति जी, मेरे पास इस वक्त एक-एक State की जानकारी नहीं है, क्योंकि हमारे पास यह एक बहुत बड़ी रकम नहीं है। कुछ समय पहले NFDC को बंद करने की राय दी गई थी, लेकिन सरकार ने इनको 27 करोड़ रुपये देकर इनकी कार्रवाई फिर से शुरू करवाई ताकि Regional languages की फिल्में बनाने के लिए मदद मिल सके। मेरे पास इस वक्त यह जानकारी है कि इन्होंने हाल में अलग-अलग languages में कौन-सी फिल्म बनाई है। पहले फिल्म बनाने पर लगभग साठ लाख रुपया लगता था, अब दो करोड़ में एक फिल्म बनती है। इन्होंने हाल ही में जो फिल्में बनाई हैं, वह 2004 में हिंदी और तेलुगू में *आनंद* फिल्म बनाई है। कई और फिल्में बनीं। इसको NFDC से रकम दी गई थी ना। इसने आगे जाकर इनाम भी जीता था। इन्होंने हाल ही में तमिल में एक फिल्म *सासाराम* बनाई है, मलयालम में *बायोस्कोप* बनाई है, कोंकणी में *पलटादाचो* फिल्म बनाई है, राजस्थानी में *हाट* और बंगाली में *माया बजार* बनाई है।

SHRI BHARATKUMAR RAUT: Mr. Chairman, Sir, the NFDC was formed to give boost to quality film making, niche film making and make it commercially viable. I come from Mumbai. The experience of new film makers — those who want to make new films — about the red tapism and the bureaucracy within NFDC is that for three years, four years, the scripts are not passed, and, because of this, good film makers are shying away from NFDC. This is number one. Secondly, Sir...

MR. CHAIRMAN: One question please. ...*(Interruptions)*...

SHRI BHARATKUMAR RAUT: Please, Sir. It is a related question. Another thing is that those films which are produced by NFDC are, perhaps, meant only for competitions abroad. When the films go for competition, our people are happy. Thirdly, Sir, NFDC has a very good theatre in Mumbai. This is a *zamana* of multiplexes, small theatres, mini-theatres, and, the NFDC's theatre is just waiting for audience because of our rules which are outdated. Will the Minister look into this?

SHRIMATI AMBIKA SONI: Sir, we are looking into the whole gamut of revamping, reinventing and revitalising the NFDC. As I informed the august House, that a few years ago, it

†[ ]Transliteration in Urdu Script.

had been decided to wind it up because it was a loss making public sector undertaking. We have decided to give it yet another opportunity because the principal mandate of the NFDC is to encourage first-time directors and producers to make films, especially, in regional languages and to make quality films. Sir, given the very small budgetary allocation, which this public sector undertaking has, as I just said, in 2008-09, they made about eight films which was the maximum that they could do within the budgetary restrictions. What used to be a sixty-lakh rupees grant initially has gone up to two crore of rupees per film.

In 2009-10, we are making five films as of now At the Goa Film Festival, we have a Film Market where NFDC tries to market the quality films made by them. Recently, we have entered into an MoU with Public Service brodcasting trust and Mr. Shyam Benegal, Mr. Rajiv Mahrotra, Mr. Adoor Gopalakrishnan, Mr. Mrinal Sen and other eminent filmmakers are associated with it. We are having an MoU with them to encourage producers and try to identify first-time directors. Then we had VRS where we reduced the strength of the NFDC from 211 to something like 141. And we are further going to reduce it. While we are cutting off the flab making it more serviceoriented, budgetary provisions are not adequate to do as much as we would like to do. But we are trying our best.

श्रीमती विप्लव ठाकुर : माननीय सभापति जी, मंत्री जी ने NFDC के बारे में बहुत कुछ बताया कि यह एक ऐसी institution थी, एक ऐसी Public Sector Undertaking थी, जिससे लोगों को फिल्म बनाने के लिए encouragement मिलती थी। मैं यह जानना चाहती हूँ कि दूरदर्शन में इनकी free commercial क्यों बन्द कर दी गई है? इसका क्या reason था कि इनके पास profit का जो एक जरिया था, उसे बन्द कर दिया गया है?

श्रीमती अम्बिका सोनी : सर, 2002-03 में यह जो commercial time sharing थी, जहाँ Friday, Saturday and Sunday को दूरदर्शन के जरिए ये फिल्में दिखाते थे और दूरदर्शन को उन फिल्मों के लिए एक minimum price दी जाती थी, ताकि उनको revenue loss न हो, लेकिन उस दौरान जो advertisements आते थे, वे NFDC के खाते में ही होते थे। आपको मालूम है कि 1990 में प्रसार भारती एक्ट पास किया गया और 1997 में हम लोगों ने प्रसार भारती को कायम किया। यह उनका निर्णय था। उनको अपना निर्णय लेने की autonomy है। उन्होंने इसे क्यों बन्द किया, मेरे लिए यह जवाब देना कठिन है।

डा. के. केशव राव : सर, सवाल सिर्फ फिल्म प्रोडक्शन का नहीं है। जब वे फिल्म इंडस्ट्री की बात करती हैं, तो मैं आपके द्वारा मंत्री जी से पूछना चाहता हूँ कि क्या आपने exhibition को थियेटर के साथ जोड़ दिया है, क्योंकि exhibition की और थियेटर्स की जो monopoly होती है, वह प्रोड्यूसर्स के साथ होती है? आप कितनी भी क्वालिटी फिल्म बनाएँ, वे वहाँ exhibit नहीं करते। इसलिए अगर NFDC चाहती है, हर राज्य में या हर जिले में, जैसा भी हो, वहाँ exhibition की सहूलियत पैदा की जाए, जिससे फायदा होता हो। क्या आपके पास ऐसी कोई स्कीम है?

श्रीमती अम्बिका सोनी : सर, मुझे पूरी तरह से प्रश्न समझ में नहीं आया, मैं माफी चाहती हूँ। पहले फिल्म डिवीजन जो फिल्में बनाता था, उन्हें थियेटर्स में फिल्म शुरू होने से पहले दिखाया जाता था। काफी अरसा हो चुका है कि थियेटर owners ने उसे दिखाना बन्द कर दिया है। हाल में कुछ कानूनी आदेश आए हैं, जिनके अनुसार किसी-न-किसी तरह की फिल्म दिखाना अनिवार्य है। सर, मैं आपको बताना चाहती हूँ कि पिछले

5 महीने में हमने प्रयास किया है और हर मंत्रालय और हर मुख्यमंत्री को मैंने स्वयं पत्र लिख कर अनुरोध किया है कि जो documentaries स्टेट की तरफ से या अलग-अलग मंत्रालयों की तरफ से बनती हैं, उनके लिए NFDC को chance दिया जाए। मुझे यह बताते हुए खुशी है कि पिछले 3-4 महीने में NFDC को इस जरिए काफी काम मिला है। मुझे इस बात की उम्मीद है कि हम आने वाले समय में अच्छी documentaries बना सकेंगे और वे मुफ्त में नहीं दिखाई जाएंगी, बल्कि उनकी एक market price निर्धारित की जाएगी।

Power allocation to Goa

*246. SHRI SHANTARAM LAXMAN NAIK: Will the Minister of POWER be pleased to state:

(a) whether the Government of Goa has made any request for additional power;

(b) whether any decision has been taken in this regard;

(c) the power requirements of the State fulfilled in the last five years;

(d) whether coastal villages of the State are to be provided with underground cables; and

(e) if so, the details of the proposal made in this regard by the State Government and the decision taken thereon?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF POWER (SHRI BHARATSINGH SOLANKI): (a) to (e) A Statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) and (b) Government of Goa had requested in August, 2009 for allocation of additional power from unallocated power of Central Generating Stations. Goa has been allocated 50 MW (25 MW from unallocated power of Kawas and Gandhar Gas Based Power Stations and 25 MW from the unallocated power of Central Generating Stations of Western Region) on 16.11.2009.

(c) Goa has an installed capacity of approximately 78 MW in the State and Private Sector. In addition, it has firm allocation of 403 MW from Central Generating Stations (CGSs) in Western Region and Southern Region and approximately 50 MW presently allocated from the unallocated power of Central Generating Stations to cater the power requirements of the State.

The power supply position in the state of Goa for the last five years is given below:

Year	Energy				Peak			
	Requirement (MU)	Availability (MU)	Shortage (MU)	(%)	Demand (MU)	Met (MU)	Shortage (MU)	(%)
1	2	3	4	5	6	7	8	9
2004-05	2146	2146	0	0	356	356	0	0
2005-06	2338	2338	0	0	368	368	0	0